Journal of Socio-Educational & Cultural Research, Vol. 3, No. 7, July-December, 2017 ISSN : 2394-2878

ग्रामीण आदिवासियों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

डॉ० उमेश कुमार गुप्ता
पीएच०डी०, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सामाजिक और आर्थिक विकास से संबंधित है। विकासशील देशों में आर्थिक विकास के साथ–साथ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया भी देखी जा रही है। दरअसल आधुनिकीकरण एक परिवर्तन की प्रक्रिया है। परन्तु यह प्रक्रिया कैसे होती है तथा इसके पीछे कौन–कौन सी शक्ति कार्य करती है, यह एक जटिल समस्या है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत अल्पविकसित समाज, अधिक विकसित समाज की सामाजिक व आर्थिक विशेषताओं को अपनाते है। डेनियर लर्नर ने आधुनिकीकरण की चर्चा करते हुए कहा है कि किसी समाज में आधुनिकीकरण सबसे पहले जब शुरू होता है तब शिक्षा का प्रसार आरम्भ होता है। जब समाज में शिक्षा का विकास हो जाता है तब सक्रिय हिस्सेदारी शुरू होती है। इसके बाद राजनैतिक हिस्सेदारी तथा परानुभूति की स्थिति आती है। ये सब समाज में एक के बाद एक तब तक आते हैं जब तक कि किसी एक का निश्चित प्रतिशत या अनुपात में विकास नहीं हो जाता। इन सब बातों के होने के बाद ही किसी समाज में आधुनिकीकरण आता है।[1]

सक्सेना ने आधुनिकीकरण की चर्चा करते हुए कहा है कि पिछले वर्षों में आधुनिकीकरण का प्रयोग गैर–पश्चिमी देशों में पश्चिमी देशों की तरह परिवर्तन करने की क्रिया के लिए किया जाता रहा है। क्योंकि पश्चिमी देश तकनीकी, आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक दृष्टि से अधिक प्रगतिशील है।[2]

आधुनिकीकरण के प्रभावस्वरूप उत्पन्न समस्याएँ :

आधुनिकीकरण का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और समाज को विकसित बनाना है। बहुत हद तक यह एक कल्याणकारी प्रक्रिया भी है लेकिन हमेशा नहीं। जब समाज परम्परागत व्यवस्था से आधुनिकता की ओर बढ़ता है तो कई बार चाहे–अनचाहे विभिन्न प्रकार की समस्याओं को भी झेलना पड़ता है, जिसे समाजशास्त्र की भाषा में आधुनिकीकरण का दुष्प्रकार्य कहते हैं। आधुनिकीकरण के दौरान शिक्षा का काफी प्रचार–प्रसार होता है। हर किसी को अपनी इच्छा और योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का पूरा–पूरा अवसर प्राप्त होता है। लेकिन योग्यता के अनुसार हर किसी को जीवनयापन के लिए रोजगार नहीं मिल पाता है। काफी लोग शिक्षित होकर बेकार हो जाते हैं। फलस्वरूप समाज में नवयुवकों को अनेक प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है जो सामाजिक तनाव, राजनीतिक अस्थिरता एवं शहरों में बढ़ते हुए अपराधों में परिलक्षित होती है।

आधुनिकीकरण के द्वारा समाज के सभी तत्वों या अंगों में समान रूप से परिवर्तन नहीं होते, जिसके चलते सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में तनाव पैदा होते हैं। भारत में वर्ग–व्यवस्था तो आया है, लेकिन दूसरी तरफ भाई–भतीजावाद, जातिवाद एवं क्षेत्रीयता भी बढ़ी है। नारी–शिक्षा के कुछ अच्छे परिणाम हुए है तो दूसरी तरफ पारिवारिक तनाव की घटनाओं एवं दहेज प्रथा में वृद्धि हुई है।

आधुनिकीकरण के कारण समाज में आधुनिक एवं परम्परागत मूल्यों के बीच हमेशा तनाव की स्थिति बनी रहती है। जब आधुनिक होने का अनुभव होता है साथ ही उस आधुनिकता के कुछ खतरे का एहसास होता है तो पीछे मुड़कर वे फिर अपने धर्म और विश्वासों के पुनरूत्थान के लिए आंदोलन चलाते है। समय–समय पर व्यक्ति इतना पीछे मुड़ जाता है कि लगता ही नहीं कि वह कभी आधुनिक भी था।

आधुनिकीकरण अक्सर व्यक्तियों में द्विविधा की स्थिति उत्पन्न करता है। लोग एक साथ आधुनिक और परम्परावादी दोनों ही बनने की कोशिश करते है। ऐसे लोग परिवार से लेकर राष्ट्रीय

जीवन में भी द्वन्द भाव के चलते मनोवैज्ञानिक तनाव की स्थिति में जीते हैं। कभी–कभी निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि क्या अच्छा और बुरा है। यही कारण है कि आज लोग इतने अशांत हैं कि शायद इतना कभी नहीं थे। जब समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुजरता है, तो व्यक्तियों के लिए तनावपूर्ण जीवन अवश्यम्भावी हो जाता है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के प्रभाव से समाज के परम्परागत बंधन टूटने लगते हैं, यहाँ तक कि अपने लोग भी पराए नजर आते हैं। लोग सामाजिक स्वार्थ को भूलकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में लीन हो जाते हैं। पुरानी संस्थाएँ टूटने लगती हैं और नयी संस्थाएँ उभरकर सामने आती हैं जो सापेक्षिक रूप से बहुत दीर्घायु नहीं हो पातीं। समाज में सहयोग की भावना में कमी आ जाती है। 'वयम' भावना 'अहम्' भावना का रूप ले लेती है। सामाजिक सहयोग एवं बंधनों की जगह कानूनी संविदा ले लेती है। लोगों का जीवन सामाजिक नियमों से कम और राजकीय कानूनों से ज्यादा चलता है।

आधुनिकीकरण के अंतर्गत हर किसी को अपनी योग्यता, कार्यकुशलता एवं मेहनत के बल पर आगे बढ़ने का पूरा–पूरा अवसर प्राप्त होता है। पर हर व्यक्ति समान रूप से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कभी नहीं कर सकता हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि लोग निराशावादी जीवन व्यतीत करने लगते हैं। जो लोग समाज में पिछड़ जाते हैं, वे पूरे समाज के लिए बोझ बन जाते हैं। कभी–कभी तो कुछ लोग निराशा की स्थिति में विभिन्न किस्म के अपराध कर बैठते हैं या पागल हो जाते हैं। संभवतः इसी कारण से आधुनिक युग में पहले की तुलना में पागलपन काफी बढ़ा है।[3]

परम्परागत आदिवासी जीवन के परिवर्तनशील पक्षों को देखने से अक्सर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने झारखण्ड के जनजातीय समुदाय को किस हद तक प्रभावित किया है। वास्तव में झारखण्ड के आदिवासी समुदाय में आधुनिकता का प्रभाव ब्रिटिश शासन काल से ही स्पष्ट होना आरंभ हो गया था, परन्तु संपूर्ण जनजातीय क्षेत्र में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव समान रूप से न होने के कारण आज आधुनिकता का प्रभाव भी विभिन्न जनजातीय ग्रामों और विभिन्न आदिवासियों में विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजों ने जनजातीय क्षेत्रों में अनेक संरचनात्मक परिवर्तन उत्पन्न करके आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया। यह संरचनात्मक परिवर्तन प्रशासन, नौकरशाही व्यवस्था, नवीन न्याय पद्धति, पुलिस और सेना की स्थापना, शिक्षण संस्थानों में वृद्धि, संचार और परिवहन में साधनों का विकास तथा कृषि की नवीन प्रविधियों के रूप में था। संचार और परिवहन के साधनों ने जहाँ झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्रों के स्थानीय दूरी को कम करके विभिन्न आदिवासी समूहों के बीच पारस्परिक सम्पर्क को प्रोत्साहन दिया, वहीं ईसाई मिशनरियों ने नवीन शिक्षा का प्रसार कर झारखण्ड के आदिवासियों के विकास के लिए अवसर प्रदान किया। ब्रिटिश काल में जिन पश्चिमी विशेषताओं का आदिवासी क्षेत्रों में प्रसार हुआ उनके प्रभाव से अनेक अंधविश्वास और कुरीतियाँ समाप्त होने लगीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वयस्क मताधिकार के द्वारा स्थापित संसदीय जनतंत्र, समाजवादी व्यवस्था, सामंती सुविधाओं का उन्मूलन, पंचायती राज की स्थापना तथा पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत आदिवासी विकास कार्यक्रम का सम्पादन आदि आधुनिकीकरण के विशेष वाहक थे, जिन्होंने आदिवासियों के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करना आरंभ किया। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा आदिवासी विकास के लिए किये गये प्रयत्नों से आदिवासी गाँवों में अनेक संरचनात्मक परिवर्तन होने लगे। यातायात के साधनों का विकास, नयी सड़कों का निर्माण, रेडियो, समाचार पत्रों तथा संचार के नये साधनों का प्रसार होने लगा तथा नवीन शिक्षा संस्थानों के वृद्धि होने से आदिवासी क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। इसके फलस्वरूप आदिवासियों द्वारा अनेक आधुनिक वस्तुओं का उपयोग किया जाने लगा। खान–पान के बर्तन भी अब पहले जैसे नहीं रहे, बल्कि आदिवासी गाँवों में भी ऐलुमिनियिम, स्टील तथा काँसा के बर्तनों का बहुत अधिक उपयोग किया जाने लगा। आज आदिवासी

पुरूष तथा महिलाओं के वेश–भूषा में आधुनिकता की स्पष्ट झलक दिखायी देती है। साइकिल, मोटर साइकिल, घड़ी, रेडियों और ट्रांजिस्टर इत्यादि आदिवासी गाँवों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गये हैं। गाँवों में आदिवासी महिलायें परम्परागत भले ही हों, किन्तु शहरों में उनके जीवन शैली में आधुनिकता के स्पष्ट लक्षण दिखलाई पड़ते हैं।

आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण आज आदिवासी समुदाय के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन की प्रक्रिया तेज हो गयी है। कल–कारखानों में काम करने वाले जनजातीय कामगारों के बीच नगरीय मूल्य के प्रसार के कारण खान–पान तथा व्यावसायिक विभाजन के प्रतिबंधों में भी व्यापक परिवर्तन दिखायी देने लगे हैं। पहले आदिवासी गाँव स्वयं में एक राजनैतिक इकाई था। हातु पंचायत में मुंडा, पाहन तथा कोतवार की सत्ता इतनी प्रबल थी कि कोई व्यक्ति उसकी अवहेलना करने का साहस नहीं कर सकता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजनैतिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण होना आरंभ हुआ तथा बढ़ती हुई समस्याओं को रोकने के लिए राज्य के अधिकार क्षेत्र में तेजी से वृद्धि होने लगी। इसके फलस्वरूप आदिवासी गांवों में भी जनतांत्रिक आधार पर मताधिकार के द्वारा वैधानिक पंचायतों की स्थापना की गयी तथा बड़े–बड़े राजनैतिक दलों ने आदिवासी गांवों में भी अपनी गतिविधियों में तेजी लाना प्रारंभ कर दिया। इसके फलस्वरूप आदिवासी गाँवों में राजनैतिक जागरूकता तथा अधिकारों के प्रति जनचेतना पनपने लगी तथा परम्परागत आदिवासी नेताओं यथा–मानकी, मुंडा, महतो, पाहन, मांझी आदि का प्रभाव दिनों–दिन घटने लगा।

आदिवासी गाँवों में अब विवाह के अवसर पर आधुनिक ढंग से की गयी साज–सज्जा को महत्व दिया जाता हैं तथा आधुनिक ढंग से खाद्य एवं पेय पदार्थों का उपयोग किया जाने लगा है। पर्व त्योहारों में चन्दा वसूलने का प्रचलन तथा साउण्ड बॉक्स का प्रयोग आज आम बात हो गयी है। आदिवासी समुदाय के बीच आधुनिकता का एक स्पष्ट लक्षण कृषि में नवीन प्रविधियों के उपयोग के रूप में देखने को मिलता है। शहरों तथा कस्बों के निकट अवस्थित आदिवासी गांवों में सहकारी समितियों से लेकर उन्नत बीज, रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाओं का उपयोग करके अत्यधिक कृषि उत्पादन किया जाने लगा है। आलू तथा हरी सब्जियों के उत्पादन में अब वे किसी से पीछे नहीं रह गये हैं, जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में भी उन्नति हुई है। आदिवासी गाँवों में आधुनिकीकरण का एक विशेष कारण शिक्षा के प्रति आदिवासियों की बदलती हुई मनोवृतियों के रूप में स्पष्ट हुआ है। आज अधिकांश शहरी आदिवासी अपने बच्चों को आधुनिक तथा उच्च शिक्षा देने के पक्ष में है। सरकार द्वारा आदिवासी छात्रों को छात्रवृति देने तथा उच्चतर शिक्षा में उनके द्वारा आरक्षण लागू किये जाने के कारण आदिवासियों को शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिला है।

आदिवासी समुदाय में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने लोक संस्कृति को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वास्तव में लोक संस्कृति सम्पूर्ण आदिवासी समुदाय के जीवन की आंतरिक अभिव्यक्ति होती है तथा इसमें होने वाला कोई भी परिवर्तन सम्पूर्ण आदिवासी जीवन के परिवर्तन की ओर संकेत करता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत नये कानूनों का निर्माण हुआ तथा प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार दिया गया कि वह ऐसे परम्परागत व्यवहारों की खुलकर आलोचना कर सकता है, जो रूढ़िवादी तथा समाज की प्रगति में बाधक हैं। नगरों के साथ सम्पर्क के कारण आदिवासी लोक संस्कृति के अस्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आज आदिवासी समाज में लोक संस्कृति का कुछ अंशों में व्यवसायीकरण भी हो रहा है। लोक–संस्कृति से संबंधित नृत्य, संगीत एवं नाटक आदि का प्रचार और प्रसार करने के लिए कुछ आदिवासी गांवों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाने लगी है तथा बहुत से आदिवासी व्यक्ति अपने क्षेत्र की संस्कृति का अन्य क्षेत्रों में भी इसलिए प्रसार करते है, जिससे वे इसके द्वारा अधिक–से–अधिक लाभ प्राप्त कर सके।[4]

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण आदिवासी समाज पर आधुनिक मूल्यों एवं नवाचारों का प्रभाव आंशिक रूप से पड़ा है। लेकिन फिर भी औद्योगीकरण, नगरीकरण, ईसाई मिशनरियों के प्रभाव, शिक्षा के प्रसार, राजनैतिक चेतना में वृद्धि, परिवहन और संचार का विकास, सामाजिक गतिशीलता में अभिवृद्धि तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के फलस्वरूप आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को काफी बल मिला है। किन्तु इस बात को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं के बावजूद आदिवासी जीवन में लोक संस्कृति तथा परम्परा का अस्तित्व आज भी अपने संशोधित रूप में विद्यमान है।

संदर्भ :

1. लर्नर, डेनियल, 1958, द पासिंग अवे ऑफ ट्रेडिशनल सोसाइटी, फ्री प्रेस लन्दन, पृ.सं. 186.
2. सक्सेना, आर.एन., 1972, मोर्डनाइजेशन एण्ड डेवलपमेंट ट्रेन्डस इन इंडिया, सोसियोलोजिकल बुलेटिन, नई दिल्ली, भोल्यूम–21, सितम्बर, पृ.सं. 98.
3. सिंह, जे.पी., 1976, सामाजिक परिवर्तन : स्वरूप एवं सिद्धांत, पब्लिशड बाई ए.के. घोष, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा.लि. नई दिल्ली, पृ.सं. 210.
4. वर्मा, उमेश कुमार, 2009, झारखण्ड का जनजातीय समाज, सुबोध ग्रंथमाला राँची, पृ.सं. 258–60.